

# जार्ज एडवर्ड की संरचना

classmate

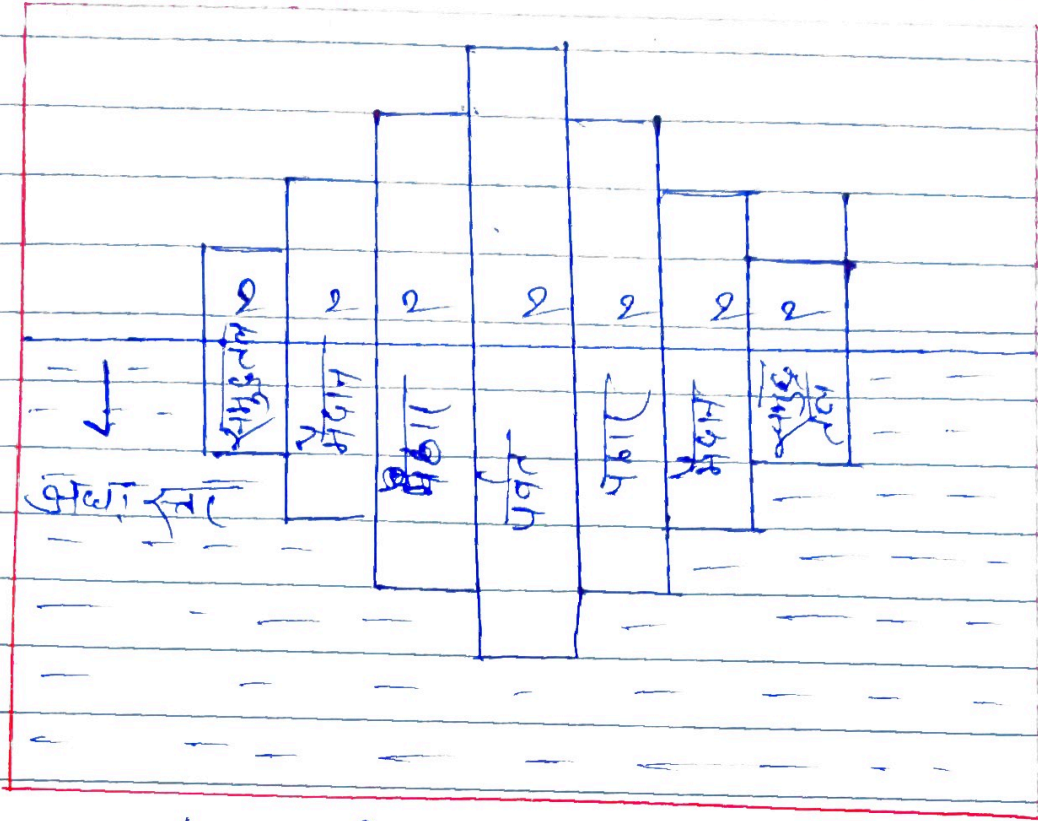
Date \_\_\_\_\_

Page \_\_\_\_\_

## (Concept of Sir George Murray)

- ब्रिटिश खगोलज्ञ सर जार्ज एडवर्ड ने सन् 1859 में ग्रह महाकाय के खोजों के आधार पर अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि हिमालय का आंतरिक भाग खगोलज्ञ भी है। पृथ्वी के विभिन्न ध्रुवों अवस्था पा रहे रहे हैं। पृथ्वी का ऊपरी भाग ठोके पदार्थों तथा आंतरिक भाग भारी पदार्थों का बना है।
- पृथ्वी के विभिन्न भाग एक ही प्रकार के चट्टानों से निर्मित हैं किन्तु इनके गहराई में अंतर आयतन की भिन्नता के कारण भिन्न भिन्न हो सक्ता है।
- ऊर्ध्व रेखी हुई ध्रुव अपने धार के बराबर नीचे के अक्ष को हटा देती है। इसी प्रकार पर्वत भी अक्ष भाग में अपने धार के बराबर भारी पदार्थों का बना होते हैं।
- अपटदन तथा विक्षेपण के कारण संतुलन में अंतर आने से धरातल के विभिन्न भागों के तल संतुलन के सिद्धांत के आधार पर ऊँचे-नीचे होते रहते हैं। आंतरिक पदार्थ अधिक दाय के क्षेत्रों के नीचे से कम धार के क्षेत्रों की ओर खिसका रहता है।
- आकामेडिज के सिद्धांत के आधार पर किली रेखी हुई ध्रुव का 9 भाग पानी में अवशोषण रहता है तथा एक भाग ऊपर रहता है। इस सिद्धांत से एडवर्ड ने निष्कर्ष निकाला कि साहज्य रूप से आकर्षण हिमालय की ओर कम रहा समीचीन उनके नीचे ठोके पदार्थों ने स्थान ग्रहण कर लिया है।
- एडवर्ड के अनुसार जो भाग अधिक ऊँचा है उसका अधिक भाग तथा जो भाग कम ऊँचा है उसका कम भाग अक्ष रेखा में

डुबा हुआ है। अर्थात् विभिन्न स्तरों का घनत्व समान होता है किन्तु उनकी गहराई में अंतर होता है। (Uniform density with varying thickness)



- इनको आपने सिद्धांत को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न लम्बाई के लकड़ी के टुकड़े को पानी में डुबाएँ। इनका घनत्व समान था किन्तु लम्बाई में अंतर था। ये टुकड़े अपनी आकार के अनुसार अधिक या कम पानी डुबेंगे अधिक गहराई तक तथा कम भार के टुकड़े कम गहराई तक डुबेंगे।
- अतः इससे स्पष्ट होता है कि ऊँचे उठे हुए भाग संतुलित अवस्था में रहकर टिक रहते हैं यह वही भाँती होता है जिस प्रकार लड़-पेंड की अर्ध अधिक गहराई तक तथा छोटे पेंड की अर्ध कम गहराई तक होते हैं।